स्वावलंबी शिक्षण हेच आमचे ब्रीद-कर्मवीर

रयत शिक्षण संस्था संचलित,

छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा

Reaccredited by NAAC at "A" Grade (With CGPA - 3.10)
College with Potential for Excellence Status Awarded by UGC, New Delhi
Lead College of Shivaji University, Kolhapur

हिंदी विभाग

एवं

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

हिंदी के रीतिकालीन कवि

प्रमाणपत्र

दिनांक 10 अक्तूबर, 2015

प्रा. डॉ. श्री/ श्रीमती एस. के. खोत चंद्राबाई शेंडुरे कॉलेज, हुपरी को ' हिंदी के रीतिकालीन कवि' विषय पर आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में सक्रिय सहभाग लेने और आचार्य कवि केशवदास विषय पर ~~बीजभाषक~~ / ~~प्रमुख अतिथि~~ / ~~अध्यक्ष~~ / प्रपत्रपाठक / ~~प्रतिभागी~~ के रूप में उपस्थित रहकर मार्गदर्शन करने / प्रपत्र प्रस्तुत करने के उपलक्ष्य में यह प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है ।

डॉ. भारत खिलारे
सहसंयोजक
एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

प्रा. रुकसाना पठाण
संयोजक
एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

प्रा. निर्मला माने
समन्वयक एवं अध्यक्षा, हिंदी विभाग
एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

डॉ. गणेश ठाकूर
प्राचार्य
छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा

VISHWABHARATI RESEARCH CENTRE
VISHWABHARATI
www.vishwabharati.in

हिंदी के रीतिकालीन कवि

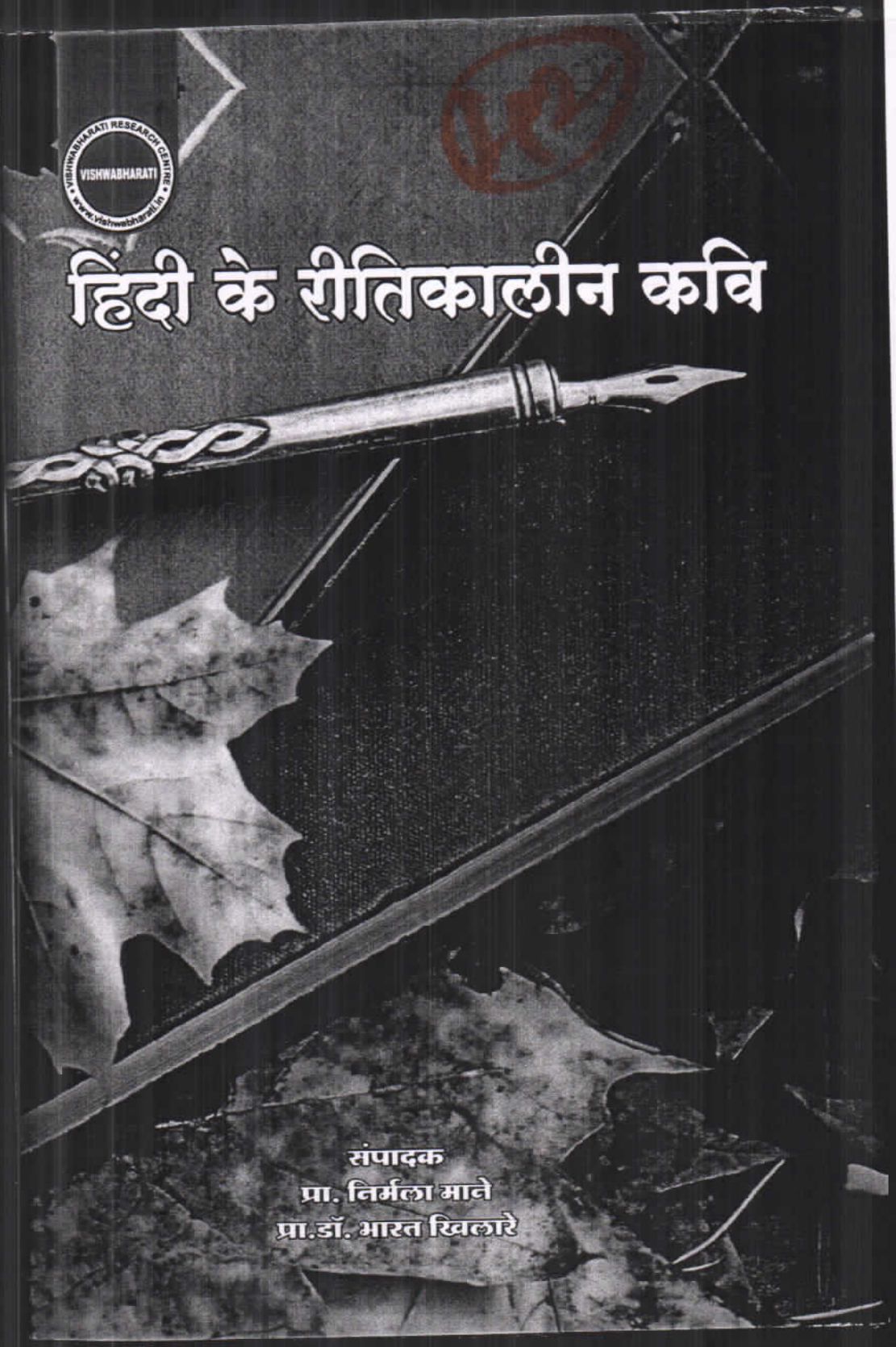

संपादक
प्रा. निर्मला माने
प्रा.डॉ. भारत खिलारे

११. बिहारी के काव्य की प्रासंगिकता ९०
डॉ. देवीदास इंगळे

१२. प्रेम पीर के मतवाले रीति मुक्त कवि : बोधा ९५
प्रा. डॉ. सुमित्रा बाबासाहेब पोवार

१३. सतसई परंपरा और बिहारी सतसई ९९
डॉ. पठान रहीम खान

१४. रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि घनानंद १०७
प्रा. अंबुजा मलखेडकर

१५. रीतिकालिन काव्यधारा के कवि सेनापति ११०
प्रा. सलीम इब्राहिम मुजावर

१६. भूषण की कविता में राष्ट्रीयता ११३
प्रा. राजेंद्र इंगोले

१७. रीतिकाल के कवि भूषण की राष्ट्रीय चेतना ११८
प्रा.डॉ. सौ. शैलजा रमेश पाटील

१८. छत्रपति शिवाजी के दरबारी कवि – भूषण १२४
प्रा. एम.जे. शिवदास

१९. रीतिमुक्त काव्य धारा : एक चिंतन १२८
डॉ. बी.डी. सगरे

२०. रीतिकाल के कविः गोपाल (मिश्र) १३२
प्रा. डॉ. बलवंत बी.एस.

२१. रीतिकाल में भक्ति १३५
डॉ. उत्तरा प्रसन्न कुलकर्णी

२२. बिहारी के काव्य में समाज जीवन १३९
डॉ. वर्षा गायकवाड

२३. रीतिकालीन हिंदी–साहित्य के आभूषण : कवि भूषण १४४
प्रा. शितल प्रमोद जाधव

२४. रीतिबद्ध कवि और काव्य १४८
डॉ. जाधव सुब्राव नामदेव

२५. घनानन्द और संयोग श्रृंगार १५३
प्रा. डॉ. विनायक बापू कुरणे

२६. बिहारी के दोहे में अलंकार योजना १५९
डॉ. मीनाक्षी विनायक कुरणे

२७. घनानन्द के काव्य में विरह की उदात्तता १६५
डॉ. दिलीपकुमार कसबे

२८. आचार्य कवि केशवदास १६९
प्रा. डॉ. एस.के. खोत

२९. रीतिकाल की पृष्ठभूमि १७४
डॉ. सुनिल महादेव चव्हाण

३०. रीतिकालीन काव्य–वीररस के उन्नायक कवि भूषण १८२
डॉ. भोसले आर.पी.

३१. स्वच्छंद काव्यधारा के प्रेममार्गी कवि बोधा १८७
प्रा. अश्विनी श्रीराम परांजपे

३२. रीतिकालीन कवि आ. केशवदास की काव्यकला १९३
डॉ.सौ. काटे हेमलता विजय

३३. घनानंद के काव्य की भाव व्यंजना १९९
प्रा.एम.डी. नायकू

३४. केशवदास की काव्यः साधना व काव्यगत विशेषताएं २०९
प्रा. अनिल प्रभाकर कांबळे

३५. हिंदी उर्दू शैली के काव्य के प्रणेता : कवि मीर २११
विजया जगन्नाथ पिंजारी

३६. रीतिकाल के लोकप्रिय कवि बिहारी की काव्यगत विषेशताऐं २१७
श्री हिरामण देवराम टोंगारे

करती है उसे तो लिखने का सुवसर भी नहीं मिलता।

लिखौं कैसे पियारे प्रेम पाति।
लगै अँसुवन झरि है टूक छाती
परंतु फिर भी तिहारे मिलन की आसा न छूटे
लग्यौ मन बावरौ तोरे न टूटै।।

स्पष्ट है घनानंद की वेदना को केवल हरि ही जान सकते हैं जैसे –

पहिचानै हरि कौन
मोसे अनपहिचान कों
त्यों पुकार मधि–मौन
कृपा–कान मधि नैन ज्यों।।

संक्षेप में घनानन्द के विरह वर्णन में उदात्तता है। जब संयोग से कहीं अधिक वियोग का आधिक्य है तो जाहिर होता है कि उनके रति की अध्यात्मिक परिणति वियोग श्रृंगार द्वारा ही संभव हो चुकी है। संयोग या मिलन में बाहय सौन्दर्य सृष्टि में निखार लाकर मांसल वासना प्रमुख होती है। मगर घनानंद ने संयोग में अधिक न रमकर अपना लौकिक प्रेम, विरह और साधना के माध्यम से परमोच्च के अलौकिकता के स्तर तक पहुँचकर अलौकिकता के स्तर तक पहुँच गए हैं। यही उनके प्रेम की उदात्तता है। उनके वियोग वर्णन में आँसुओं का बहाना, प्रतीक्षा करना, व्याकुल होना, अशांत और धैर्यहीन (बरोबरी) नींद न आना आदि के चित्र अंकित है। अतः घनानन्द निश्चित ही रीतिकाल के कवियों में उदात्त हृदय के शीर्षस्थ कवि है। ब्रजभाषा के माध्यम से रस अलंकार आदि की सृष्टि करके उन्होंने उन्मुक्त भाव से मानस रस का दान किया है।

संदर्भ ग्रंथ :

१) विवेचनात्मक साहित्यिक निबंध–सुशमारानी गुप्ता सं. १९८२, पृ. ७७, ७९।
२) हिंदी साहित्य का इतिहास–आचार्य डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र सं. १९९३, पृ. १५७।
३) घनानंद काव्य दर्शन–डॉ. सहदेव वर्मा प्र. सं. १९७७, पृ. ७०, ७५
४) घनानंद और स्वच्छन्द्र काव्यधारा–मनोहरलाल गौड प्र. सं. २०१५ वि., पृ. २१।

२८

आचार्य कवि केशवदास

प्रा. डॉ. एस.के. खोत

कहा जा चुका है रीतिकालीन काव्यशास्त्र के प्रवर्तन का श्रेय आचार्य–कवि केशवदास को जाता है । गौरव की बात है कि हिंदी साहित्य जगत् में आचार्यत्व और कवित्व की दृष्टि से भी एक सजग तथा सचेष्ट कलाकार केशवदास थे । उनका कलापक्ष भावपक्ष से अधिक मजबूत है । हमें यह मानना पडेगा कि भाव और कला के समन्वय की दृष्टि से देखा जाए तो केशव का क्रम सूरदास तथा तुलसीदास के उपरांत ही आता है । जाहिर है कि महाराज इंद्रजीत सिंह ने केशव की विद्वत्ता तथा काव्य कौशल से प्रसन्न होकर इक्कीस गाँव दान में दिए थे । इससे यह स्पष्ट होता है कि आचार्य केशव किस कोटी के साहित्यकार थे । आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने रीति परंपरा का प्रवर्तक आचार्य को न मानकर चिंतामणि को माना है । केशव भक्ति काल के होते हुए भी एक सुनिश्चित रीतिकाव्य परंपरा का प्रवर्तन किया है । डॉ. शिवकुमार शर्मा के शब्दों में, ''भक्तियुग के उत्तर काल में रीतिकाव्य की परंपरा पडी और इस धारा के प्रवर्तन का श्रेय निश्चित रूप से आचार्य केशवदास को है ।''१ इनके घराने में बराबर संस्कृत के अच्छे पंडित होते आए थे । वे भी संस्कृत के पंडित थे । वे अपने समय के प्रधान साहित्यशास्त्रज्ञ

प्रा. डॉ. एस.के. खोत : चंद्राबाई–शांताप्पा शेंडुरे कॉलेज, हुपरी मोबा. ९४२०४५८८२८

कवि थे । वे हिंदी के विशेष लोकप्रिय कवि बिहारी के गुरू थे ।

केशवदास स्वभाव से शांतिप्रिय तथा स्वाभिमानी व्यक्ति थे । केशव के व्यक्तित्व में दरबारी शिष्टता थी । राजा के आसपास सदैव रहते हुए भी केशव ने जन साधारण की उपेक्षा नहीं की । मतिराम सुनार तथा बिरबल के दरबान चन्द्र को अपनी रचना में गौरवान्वित कर उन्हें अमर बना दिया । केशव की कविता सौद्देष्य लिखी हुई कविता है। उनकी कविता परंपरा को दृढ करने वाली कविता है । निश्चित ही उनकी कविता समाज की आश्वस्त करनी है । अधिकांश मात्रा में केशव की कविता मुक्तक प्रधान है । केशवदास की रचनाओं की संख्या के बारे में जरूर विवाद है । किंतु अधिक मात्रा में दस कृतियों को प्रामाणिक रचनाएँ माना जाता है ।

१) रतनबावनी :

रतनबावनी केशवदास की प्रथम रचना है । ओरछा–नरेश मधुकर शाह के पुत्र कुँवर रतनसेन की वीरता का वर्णन करने के लिए इस रचना की निर्मिती की गयी है। इसमें सम्राट अकबर और रतनसिंह के युद्ध के अत्यंत सजीव तथा मार्मिक चित्र प्रस्तुत किए हैं । ''रतन बावनी का स्वर मुगल–विरोधी स्वर है । इस काव्य की भावना ओरछा के दरबार की तत्कालीन राजनैतिक मनोवृत्ति को व्यक्त करती है ।''२

२) वीरसिंह देव चरित :

यह रचना १६०७ में लिखी याने अकबर की मृत्यु के बाद की है । ओमर के राजा मानसिंह, मेवाड के महाराज अमरसिंह और ओरछा के वीरसिंह देव आदि तीन नायकों की प्रशंसा केशवदस ने की है । यह रचना यशोगान होते हुए भी ऐतिहासिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है । अनेक स्थलों पर स्वाभाविकता तथा भावुकता के सही चित्र प्रस्तुत किए है । इस रचना में दान तथा लोभ के संवाद अधिक मात्रा में है । केशव ने अपने रसमय, धर्ममय तथा नीतिमय आश्रयदाता के चरित्र को विचित्रता के साथ चित्रित किया है ।

''नव रस मय सब धर्म राजनीति मय मान ।
वीर चरित्र विचित्र किय केशवदास प्रमान ।।'' ३

३) जहाँगीर जस–चन्द्रिका :

इस रचना में सम्राट जहाँगीर का यशोगान है । इसमें उद्यम और भाग्य दोनों ही अपनी अपनी महत्ता को स्थापित करने की कोशिश करते हैं । केशव ने अन्य

वर्णनों के साथ–साथ जहाँगीर के ऐश्वर्य तथा उसकी विद्वत्ता का वर्णन प्रभावपूर्ण ढंग से किया है । केशवदास मुगलों की गौरव गरिमा से परिचित थे।

४) रामचन्द्रिका :

रामचन्द्रिका एक महाकाव्य है जिसमें रामचरित्र का गान वाल्मिकी का रामायण के आधार पर किया गया है । केशव की सर्वाधिक लोकप्रिय, श्रेष्ठ तथा बहुचर्चित रचना है। रामचन्द्रिका के कारण ही प्रशस्तियों ने केशव को उड्गन के रूप में स्वीकार किया है। इस रचना में संत तथा भक्तिकाव्य परंपरा का वहन करने का सफल कार्य केशव के द्वारा हुआ है । इस रचना की प्रेरणा का चित्रण करते हुए आचार्य केशवदास ने लिखा है कि एक रात्रि में महर्षि वाल्मीकि ने उन्हें स्वप्न में दर्शन दिए । जब कवि ने उनसे भवबंधनों से मुक्ति का उपाय पूछा तो महर्षि ने उन्हें रामकथा ही एक मात्र उपाय बताया–

भला बुरो न तू गने वृथा कथा कहै सुने ।
न रामदेव गाइ है, न देवलोक पाई है । ''४

५) विज्ञान गीता :

इस रचना में आध्यात्मिक विषयों की चर्चा है । इसका निर्माण प्रबोध –चन्द्रोदय की पद्धति पर हुआ है । इस रचना के कथानक के आधार पर कहा जा सकता है कि उनमें काव्य–निर्माण की विविध शैलियों की क्षमता थी । डॉ. शंकर मुदगल जी कहना बिल्कुल सही है कि, ''इसमें इक्कीस प्रभाव है । केशव ने इसमें विवेक द्वारा मोह का दंलन और प्रबोध का अर्जन प्रतिपादित किया है । आरंभ के प्रभावों में महामोह एवं विवेक के युद्ध का वर्णन है । शेष नौ प्रभावों में ज्ञान–विज्ञान पर प्रकाश डाला गया है ।''५ इस रचना के कारण ही केशव का व्यक्तित्व धर्मगुरू तथा आचार्य के रूप में प्रकट हुआ हैं ।

६) रसिकप्रिया :

रसिक प्रिया रसिकों के लिए प्रिय रचना है । रसिकप्रिया का आदर रसिक लोग ही कर सकते है । इस रचना में सर्वत्र प्रौढ आचार्य का दृष्टिकोण दिखाई देता है । ऐतिहासिक दृष्टि से यह रचना महत्त्वपूर्ण है । इस रचना का निर्माण राजा इंद्रजीतसिंह की प्रेरणा से हुआ है । यह रचना सोलह प्रकाशों में वर्णित है । ''रसिक प्रिया (सं. १६४८) की रचना प्रौढ है । उदाहरणों में चतुराई और कल्पना से काम लिया गया है और पदविन्यास भी अच्छे हैं । इन उदाहरणों में वाग्वैदग्ध के साथ

साथ सरसता भी बहुत कुछ पाई जाती है ।''६

७) नखशिख :

रचनाकार ने नखशिख की निर्मित्ती अपनी प्रिय शिष्या प्रविणराय को नखाशिख शिक्षा देने के उद्‌देश से की है । नखाशिख रचना अत्यंत प्रौढ रचना है । इसमें केशव ने परंपरागत उपमानों का सुंदर परिचय दिया है यह रचना सिर्फ १६ पृष्ठों की है।

८) बारहमासा :

नखशिख के विवेचन विश्लेषण के उपरान्त बारहमास का अंकन किया है। कवि ने इसके अंतर्गत चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, सावन, भादों अश्विन, कार्तिक, मृगसिर, पौष, माघ और फाल्गुन इन बारह महिनों का वर्णन किया है।

९) कविप्रिया :

इस रचना में केशव प्रौढ आचार्य के रूप में प्रकट हुए है । केशव की कविप्रिया में कवि-शिक्षा, अलंकार-निरूपण और दोषों का वर्णन है । कवि-शिक्षा प्रकरण में कवि के कर्तव्यों और कवियों में के उत्तम, मध्यम, अधमादि भेंदो का उल्लेख किया है। कविप्रिया पर सोलह प्रभाव हैं। कवि इस रचना में पूर्णतया सफलता मिली है । ''केशवदास ने कविप्रिया में काव्यदोष, कविभेद, कवि रीतियाँ, अलंकार आदि का वर्णन किया है ।''७

१०)छंदमाला :

छंदमाला छंद संबंधी छोटी सी पुस्तिका है । छंद -संबंधी शिक्षा देने हेतु इस ग्रंथ की निर्मिती की है । इस रचना का ऐतिहासिक दृष्टि से विशेष महत्त्व है, विषय-विवेचन की दृष्टि से नहीं ।

इस संक्षिप्त विवेचन के उपरान्त हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे है कि केशव के रचनाओं का स्थान हिंदी साहित्य जगत् में सदैव विशिष्ट तथा महत्त्वपूर्ण है । केशव जी ने संस्कृत काव्यशास्त्र का हिंदी रूपांतर करने का सफल प्रयास किया है। हिंदी के मध्ययुग के रचनाओं में केशव ने प्रबंध और मुक्तक दोनों प्रकार के काव्यों का प्रणयन किया है ।

संदर्भ-संकेत :

१. डॉ. शिवकुमार शर्मा, हिंदी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ, पृ. ३२६

२. डॉ. विजयपाल, केशव की काव्य चेतना, पृ. ८९
३. केशव, वीरसिंहदेव चरित, पृ. १
४. केशव, रामचन्द्रिका, पृ. १
५. डॉ. शंकर वसंत मुदगल, केशव की कविताई, पृ. ४०
६. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. ११७
७. डॉ. रामसजन पाण्डेय, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. २२२